एक महाकाव्यात्मक उपन्यास के रूप में 'गोदान'

जिन शर्तों को अपने में पचाकर काव्य महाकाव्य की सीढ़ियों पर चढ़ जाता है गोदान ने भी इन शर्तों को बखूबी पचाया है। फील्डिंग ने जहाँ अपनी रचना 'टॉम जोन्स' की भूमिका के भीतर में उपन्यास के भीतर महाकाव्य होने की घोषणा की थी वहीं रैल्फ फाक्स ने "उपन्यास विश्व की कल्पना प्रसूत संस्कृति की दुर्जुआ सभ्यता की सबसे बड़ी देन कहा है एवं उपन्यास को नये युग का या समाज का महाकाव्य कहा है।

महाकाव्यात्मक उपन्यास की शर्तें हैं: 1. विशाल चित्रफलक 2. समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधि चरित्रों का अंकन 3. समकालीन यथार्थ का चित्रण 4. कथानक में असम्बद्धता 5. उदात्त एवं युग निरपेक्ष कथानायक 6. मंगलकारी उद्देश्य 7. उत्कृष्ट शिल्प और भाषा शैली

गोदान उपन्यास की शैली में भारतीय जीवन का महाकाव्य है। उसके महाकाव्यात्मक उपन्यास होने का एक कारण यह भी है कि वह केवल युग जीवन का ही प्रतिबिम्ब नहीं है, उसमें आने वाले युग की प्रसव वेदना, युग धर्म एवं समाज को उत्थान की ओर उन्मुख करने की प्रेरणा भी है।

गोदान का चित्रफलक काफी फैला हुआ है। शहर और गाँव के विविध पहलुओं के चित्र इसकी महाकाव्यात्मकता को उजागर करते हैं। भारतीय गाँव के चित्र का शायद ही कोई कोना हो जिसपर प्रेमचंद की नज़र न गई हो। 'गोदान' में गाँव टूट रहे हैं और शहर आबाद हो रहे हैं;

ढहते हुए सामंतवाद के मलबे से महाजनी सभ्यता सिर उठा रही है; प्रेमचंद ने इन सब का चित्र विस्तृत फलक पर खींचा है। उनके रचनाओं का कैनवास बहुत बड़ा है। 'गोदान' में तो खेत खलिहान, ताल और पुरवा, शोषण, उत्पीडन, पंचायत-जुर्माना, विवाह-व्यभिचार से लेकर मारपीट एवं गाली-गलौज तक के चित्र हैं- सच्चे और सजीव।

'गोदान' समाज के मानव चरित्रों के वैविध्य का अलबम है। 'गोदान' के ग्रामीण पात्र सीधे-सादे किसान हैं- गरीब और निरक्षर। छोटे-छोटे खेतों में बैलों की तरह काम करते हैं सच्चे और ईमानदार हैं लेकिन विपन्नता की ओर हैं। गाँव का साहुकार (दुलारी सहुआइन, झींगुरीसिंह, नोखेराम आदि) हैं जो जोंकों की तरह लगाकर किसान के खून का दोहन कर रहे हैं। जमींदार राय साहब, धर्म के ठेकेदार दातादीन हैं। पंचायत तो है लेकिन पंच का वास नहीं है। थाना है अत्याचार और रिश्वतखोरी का अड्डा। दूसरी ओर शहर है जहाँ पाखंड और पैसे का बोलबाला है। यहाँ प्रेम वासना या स्वार्थ का ही दूसरा नाम है। खन्ना पुंजीपति वर्ग के प्रतिनिधि हैं। मेहता पेशे से प्रोफेसर हैं जिनका फर्ज है सामयिक समस्याओं पर आदर्शवादी ढंग से सोचना। मालती डाक्टर है और साथ ही नारी स्वातंत्र्य की प्रबल प्रवक्ता। इनके अतिरिक्त गोबर जैसा विद्रोही युवक, विधवा विवाह करने वाली झुनीया, एकनिष्ठ चमारिन सिलिया से फंसा ब्राह्मण मातादीन बेलारी के पंचों के लिए 'एक मुँह तोड उतर-धनिया तथा खुशमिजाज हरफोन मौला चरित्र मिर्जा खुर्शेद अपने ढंग के अकेले व्यक्तित्व हैं।

गोदान में तत्कालीन जीवन के प्रायः सभी पक्षों का चित्रण हुआ है। इसलिए उसे तत्युगीन भारतीय समाज का विश्वकोश कहा

जाता है। 'गोदान' के छोटे पात्रों की छोटी तस्वीरों में वैचारिक आवेश अधिक तीव्र है। प्रेमचंद यहाँ लड़ाई की हर भंगिमा को मुहावरे में बोलते हैं। गोदान की रचना में प्रेमचंद ने उन तमाम ऐतिहासिक घटना चक्रों का उपयोग किया है, जो भारतीय जन-जीवन के परिवर्तन को रेखांकित कर रहे थे जैसे- मजदूरों की यूनियनें और हड़तालें - 1929 ई., महिला आश्रम की स्थापना 1930 ई० आदि।

गोदान का कथानक असम्बद्ध ही कहा जाएगा। एक बड़े फलक पर शहर और गाँव की समान्तर कथाओं की अपनी प्रासंगिकता है किन्तु उनके पात्रों में गहरा आन्तरिक सम्बन्ध दिखाई नहीं पड़ता। 'गोदान' में कहानियों की कई परतें हैं: जैसे होरी तथा उसकी गाँव की कथा, रायसाहब की कथा, गोबर झुनिया की कथा, सोना और रूपा की कथा। रूपा की कथा में तो असम्बद्धता बिल्कुल उजागर हो जाती है। होरी रामसेवक के हाथों रूपा को बेच देता है। रूपा माँ बाप की अधूरी लालसा पूर्ण करने के लिए गाय भेजती है पर वह गाय होरी के मरने के समय तक भी नहीं पहुँचती। गोदान की असम्बद्धता को नलीन विलोचन शर्मा ने महाकाव्यात्मक उपन्यास का एक गुण स्वीकार किया है।

महाकाव्यात्मक दृष्टि से गोदान का नायक भी उदात्त और प्रतिनिधि चरित्र का वाहक है, किन्तु उसकी शक्ल नायकों की परम्परागत शक्ल से भिन्न है। वह युग संधियों पर खड़ा हो होरी संघर्षशील चेतना का प्रतीक है जिसे तयशुदा पराजय का मुह देखना पड़ता है। उसकी दब्बूपन पर खीझ पैदा होना लाजिमी है लेकिन क्या यह सामंतवाद एवं पूंजीवाद के जुए के नीचे दबे हुए आदमी की विवशता की कहानी नहीं कहता?

किसी के दरवाजे पर गाय बांधने की अभिलाषा कुछ दिन के लिए पूरी भी होती है लेकिन अपने ही भाई द्वारा गाय को विष देकर मार डालने से अधूरा ही बना रहता है। ऋण के अन्तहीन जाल में उलझ कर रह जाना, किसान से मजदूर बन जाना, धरम और मरजाद को जिन्दा रखना और खुद मर जाना उस समय के समाज की कहानी कहता है वह व्यक्ति नहीं, वर्ग है। वह संश्लिष्ट क्लैसिक चरित्र है जिसकी आत्मा में गहराई और गरिमा है। ऐसे ही चरित्र को लुकाच ने सामान्य और विशेष का संश्लेष कहा है।

गोदान का उद्देश्य उत्पीड़ितों की समस्या को अस्सी नब्बे प्रतिशत लोगों की भूख, आजादी बेकारी एवं दर्द को अभिव्यक्ति देना है। सामंतवाद और पूंजीवाद का गठजोड़ तो घातक है ही, उससे भी घातक है मजदूर में किसान का रूपान्तर। गुलामी के दिनों में हर समस्या स्वराज्य से जुड़ी है किन्तु प्रेमचंद का स्वराज्य सत्ता का हस्तान्तरण नहीं बल्कि व्यक्ति की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुक्ति है। नारी का महत्व, प्रेम का स्वरूप, विवाह का स्थान, मानव की गरिमा, समाज का विकास आदि अनेक प्रासंगिक पर्याय गोदान के उद्देश्य को महान बनाती है, उसे महाकाव्यात्मक ऊंचाई देती है।

भाषा, शिल्प और शैली को लेकर भी गोदान एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है। उसका समानान्तर शिल्प एक अद्वितीय विशेषता है। घटनाएं कार्य-कारण सम्बन्ध के फलस्वरूप आती हैं। प्रेमचन्द ने शब्द-चित्रों, वार्तालापों एवं स्वाभाविक परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में अपने चरित्रों को उभारा है। 'गोदान' का गद्य हिन्दी को प्रेमचंद की अभूतपूर्व एवं ऐतिहासिक देन है।

गोदान अपने युग की प्रतिनिधि रचना है और वह आज भी प्रासंगिक है। वह उपन्यास की शैली में भारतीय जीवन का महाकाव्य है।

— x —